International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-11-2022; Accepted: 03-12-2022; Published: 19-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 129-131

जयप्रकाश नारायण, लोकतंत्र और नया भारत

Dr. Kavita Raj
Assistant Professor, Department of Public Administration, A.N. College, Patliputra University, Patna, Bihar, India

सारांश
लोकनायक जयप्रकाश नारायण बीसवीं शताब्दी के एक महान सांस्कृतिक समाजवादी और राजनीतिक दार्शनिक थे। जयप्रकाश नारायण का सांस्कृतिक समाजवादी अवधारणा महात्मा गांधी के मानवतावादी और नैतिक समाजवादी अवधारणा की तरह ही था ।वह भारत में ऐसी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की बात कहते थे जिसमें व्यक्ति को अपना बौद्धिक, नैतिक तथा मानसिक क्षेत्र में व्यक्तित्व के विकास के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो सके। वह भारत की भ्रष्टाचार तानाशाह, जातिवाद, क्षेत्रवाद और संकुचित दलवादी भावनाओं से ग्रस्त शासन व्यवस्था में बदलाव की क्रांति लाकर समाजवादी व्यवस्था के निर्माण करने के पक्षधर थे।
मार्क्स से गांधीवाद की और बढ़ते जयप्रकाश बाबु की जीवन यात्रा एक व्यक्ति की नही बल्कि विचारों का विकास है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण कहिये या जे पी बिहार की धरती का यह सूरज स्वतंत्र भारत को लोकतंत्र और नए भारत के निर्माण का पाठ पढ़ा गया ।

मूल शब्दः लोकतंत्र और नया भारत, सांस्कृतिक समाजवादी और राजनीतिक

भारतीय लोकतंत्र, जैसा इसकी संविधान की भूमिका, मूलभूत अधिकारों, राज्यों की नीतिगत सिद्धांतों अनुसूचित जातियों, जनजातियों, समाज के अन्य पिछड़े एवं संवेदनशील वर्गो तथा उनकी कल्याण की रक्षा से संबंधित विभिन्न प्रावधानों में परिलक्षित है; एक कल्याणकारी राज्य के आदर्शों की मिसाल मानी जाती है। भारत के संविधान के क्रियान्वयन में सबसे महत्वपूर्ण बात यह प्रकट हुई कि देश की जनता ने अनुभव किया कि इस लोकतांत्रिक शासन प्रक्रिया से हम बिल्कुल अलग हैं गांव के लोगों ने अक्सर कहा है कि स्वराज्य आया जरूर लेकिन अभी वह हम तक पहुंचा नहीं है ।उनको शिकायत है कि अभी उन पर उसी ढंग से शासन किया जाता है जैसा ब्रिटिश शासन के समय होता है । ऐसे में समाज को एक ऐसे जननायक की जरूरत थी, जो उसे इस पुराने जीवन से बाहर निकाल सकें। लोकनायक जयप्रकाश नारायण उसी व्यक्तित्व में से एक नाम है जो स्वतंत्र भारत में समाजवादी विचारों के समर्थक के रूप में नए भारत की संकल्पना के साथ उभरे।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण बीसवीं शताब्दी के एक महान सांस्कृतिक समाजवादी और राजनीतिक दार्शनिक थे। जयप्रकाश नारायण का सांस्कृतिक समाजवादी अवधारणा महात्मा गांधी के मानवतावादी और नैतिक समाजवादी अवधारणा की तरह ही था ।वह भारत में ऐसी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की बात कहते थे जिसमें व्यक्ति को अपना बौद्धिक, नैतिक तथा मानसिक क्षेत्र में व्यक्तित्व के विकास के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो सके। वह भारत की भ्रष्टाचार तानाशाह, जातिवाद, क्षेत्रवाद और संकुचित दलवादी भावनाओं से ग्रस्त शासन व्यवस्था में बदलाव की क्रांति लाकर समाजवादी व्यवस्था के निर्माण करने के पक्षधर थे।

जयप्रकाश नारायण यानी लोकनायक एक ऐसा व्यक्तित्व थे, जिसने 1975 में आपातकाल के दौरान शासन व्यवस्था को ललकार कर सत्ता से बाहर कर दिया था । ऐसा अद्भुत,अद्वितीय व्यक्तित्व जिसने जाति, धर्म की भावना से ऊपर उठकर समाजवाद और लोकतंत्र का नारा लेकर जनक्रांति फैला दी और स्वंय लोकनायक कहलाए।

जयप्रकाश नारायण व्यक्तित्व परिचय

जयप्रकाश नारायण, संक्षेप में जेपी भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता थे। उन्हें 1970 में इंदिरा गांधी के विरुद्ध विपक्ष का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है। इन्दिरा गांधी को पदच्युत करने के लिये उन्होने श्सम्पूर्ण क्रांतिश नामक आन्दोलन चलाया। वे समाज–सेवक थे, जिन्हें श्लोकनायकश के नाम से भी जाना जाता है। 1998 में उन्हें मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मनित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें समाजसेवा के लिए १९६५ में मैगससे पुरस्कार प्रदान किया गया था। पटना के हवाई अड्डे का नाम उनके नाम पर रखा गया है। दिल्ली सरकार का सबसे बड़ा अस्पताल श्लोकनायक जयप्रकाश अस्पतालश भी उनके नाम पर है।

11 अक्तूबर 1902 में बिहार के सिताबदियारा में जन्मे जयप्रकाश नारायण एक आवाज़ थे लोकतंत्र का संपूर्ण स्वरूप दिखाने के।। एक शंखनाद थे नव भारत के निर्माण के प्रवेशिका परीक्षा में अपनी सफलता के परिणाम स्वरूप उन्होंने प्रतिभावान छात्रवृत्ति प्राप्त की थी ।उसके बाद उनका प्रवेश बिहार की प्रमुख शैक्षणिक संस्थान पटना कॉलेज में हुआ। वहां द्वितीय वर्ष विज्ञान के विद्यार्थी थे और विश्वविद्यालय की परीक्षा होने में कुछ सप्ताह ही रह गए थे और उनका शुल्क जमा किया जा सकता था । लेकिन उसी समय गांधी जी ने सरकार द्वारा पोषित या सहायता प्रदान स्थानों से सहयोग करने का आह्वान किया। जयप्रकाश इस आह्वान को अनसुनी ना कर सके और कॉलेज से निकल गए ।

बाद के जीवन में जयप्रकाश जी ने स्वतंत्र,स्वतंत्रता से आगे बढ़कर प्रत्येक देश में प्रत्येक बंधन से मानव मुक्ति की भावना को आत्मसात किया और मानव व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा आत्मा की स्वतंत्रता का अर्थ ग्रहण कर लिया।

वो कहते थे "यह स्वतंत्रता मेरे जीवन की वासना बन गई है । मैं कभी भी इसका सौदा रोटी के लिए सत्ता के लिए, सुरक्षा के लिए, समृद्धि के लिए,राज्य के गौरव के लिए या किसी अन्य वस्तु के लिए नहीं होने दूंगा।"

जयप्रकाश नारायण और लोकतंत्र

जयप्रकाश जी स्वयं कहते भी थे कि हमारा लोकतंत्र बहुत संकुचित आधार पर टिका हुआ है। यह एक ऐसे उल्टे पिरामिड की तरह है जो तीर के बल खडा है। हमारा कार्य है चित्र को

ठीक करना और पिरामिड को सही आधार पर खड़ा करना। वर्तमान की सामाजिक परिस्थियों में भी हमे उनकी बातो को आत्मसात करने की आवश्यकता है, क्योकि कोई भी देशकाल एक ही समय के परिवेश में नही रह सकता । सार्वजनिक जीवन में जयप्रकाश का प्रथम प्रवेश 1921 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में संचालित भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक योद्धा के रूप में हुआ था।

जयप्रकाश नारायण व्यक्तित्व से देश की सेवा में समर्पित रहे । कॉलेज छोड़ने के बाद जयप्रकाश बिहार विद्यापीठ में विद्यार्थी के रूप में प्रविष्ट हुए । जिसकी स्थापना राष्ट्रीय नेताओं ने सहयोगी छात्रों को किले की थी जिसको सरकार ने मान्यता दी थी परंतु इस संस्था में द्वितीय वर्ष से आगे विज्ञान के शिक्षण की सुविधा नहीं थी ।ऐसी परिस्थिति के शिकार दूसरे अनेक छात्रों ने कॉलेज में लौटने का निश्चय किया । असहयोग आंदोलन भी समाप्त हो चुका था ।कॉलेज में लौटने तथा सरकार द्वारा प्राप्त करने को राजी नहीं हुए प्राप्त करने की इच्छा कायम नहीं और अंत में 1922 में अमेरिका के लिए चल पड़े और जबकि उनके पास आवश्यक साधन भी प्राप्त नहीं थे ।

अमेरिका में मार्क्सवादी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अपना स्थान ग्रहण किया।

"जयप्रकाश नारायण कहते हैं मेरा अतीत जीवन पथ किसी बाहरी व्यक्ति को अस्थिरता तथा अंधान्वेषण का एक टेढ़ा मेधा एक वर्क रेखाचित्र जैसा प्रतीत होगा। लेकिन जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो उसमें मुझे विकास की अटूट श्रृंखला दिखाई पड़ती है ।" लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान शासन प्रणाली, दल,निर्वाचन ––यह सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग हैं, किंतु जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी लोगों का आचार विचार ठीक नहीं रहेगा,तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और राजनीतिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता । वर्तमान उद्योगवाद, फिर वह भले ही पूंजीवादी हो, समाजवादी या कम्युनिस्ट हो; इस भौतिकवादी प्रवृत्ति की सृष्टि कर रखी है उसके साथ लोकतंत्र का मेल नहीं खाता है; दोनों साथ–साथ नहीं चल सकते । मेरी मान्यता है कि यदि मनुष्य वास्तविक रुप से स्वतंत्रता और स्वशासन की स्थिति का उपभोग करना चाहता है तो उसे सुरक्षा से अपनी जरूरतें घटाने होंगी।

जयप्रकाश नारायण द्वारा लोकतंत्र का प्रयास

1960 के दशक के अंतिम भाग में वे राजनीति में पुनः सक्रिय रहे। 1974 में किसानों के बिहार आन्दोलन में उन्होंने तत्कालीन राज्य सरकार से इस्तीफे की मांग की।

वे इंदिरा गांधी की प्रशासनिक नीतियों के विरुद्ध थे। गिरते स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने बिहार में सरकारी भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन किया। उनके नेतृत्व में पीपुल्स फ्रंट ने गुजरात राज्य का चुनाव जीता। 1975 में इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की जिसके अन्तर्गत जे० पी० सहित ६०० से भी अधिक विरोधी नेताओं को बन्दी बनाया गया और प्रेस पर सेंसरशिप लगा दी गयी। जेल में जे० पी० की तबीयत और भी खराब हुई। 7 महीने बाद उनको मुक्त कर दिया गया। 1977 जेपी के प्रयासों से एकजुट विरोध पक्ष ने इंदिरा गांधी को चुनाव में हरा दिया।

जयप्रकाश बाबू एक सच्चे समाजवादी नेता थे । उन्होंने नेहरू को लिखा भी है कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि समाजवाद के प्रति हमारा दृष्टिकोण और व्यवहारिक संघ की या अनुदान नहीं है परंतु मैं एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूं चाहे हमारा दृष्टिकोण कितना भी अनुभवमूलक और प्रायोगिक हो,समाजवाद के लक्ष्य और मूल्य हमारे सामने अपरिवर्तनीय रूप से निश्चित है। हम चाहे इसे किसी बात की संज्ञा दे या नहीं दे। इसमें रंच मात्र भी संदेह नहीं है कि हम सभी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें साधन ना हो जिसमें आर्थिक और सामाजिक समानता हो ।जिसमें स्वतंत्रता और सब के कल्याण की संभावना हो ।इसके अलावा यह लक्ष्य हमारी दृष्टि और इसलिए किसी भी समाजवादी की दृष्टि से सुदूर भविष्य में नहीं बल्कि शीघ्र अति शीघ्र प्राप्त किए जाने चाहिए।

समाजवाद के लिए उत्कंठा के साथ–साथ गांधीवाद के लिए भी उनकी उतनी ही समर्पित भावना थी। जयप्रकाश नारायण जी कहते थे कि हम सब लोगों पर गांधीजी का गहरा असर पड़ा है पर मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि इधर कुछ समय से मैं उनका पुनर्वसन कर रहा हूं और फिर से उन्हें समझ रहा हूं। मैं मानता हूं कि आधुनिक युग के सबसे विशेष चिंतकों में थे। मुझे विश्वास है कि आज और कल भी उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है । मैं यह विश्वास करता हूं कि यदि वह जीवित रहते उनके विचारों में और भी विकास हुआ होता, जैसा कि उनमें निरंतर हो रहा था और तब जिन लक्ष्यों को हम सम्मिलित रूप से मानते हैं उनकी प्राप्ति के लिए जिस तरीके का अनुसरण करते हैं ।उसका और भी अस्पष्ट चित्र हमारे सामने होता है।मैं विश्वास करता हूं कि गांधीवादी और समाजवादियों की एक साथ काम करना चाहिए।

1951 में उनके द्वारा लिखित समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र में हम उन्हें 1 साल पूर्व गांधीवादी कार्यकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत आर्थिक विकास की सर्वोदय योजना का सावधानी से अध्ययन करने की सिफारिश करते हुए पाते हैं। जयप्रकाश बाबु कहते हैं कि यह योजना आवाज नहीं है बल्कि बुनियादी सामाजिक क्रांति का एक ठोस कार्यक्रम है । इसके प्रमुख अंगों पर विचार करने के बाद जयप्रकाश नारायण आशा व्यक्त करते हैं गांधीवादी कार्यकर्ता और समाजवादी दल के सदस्य इसके आधार पर एक नई समाज व्यवस्था का निर्माण करने के लिए आपस में सहयोग करेंगे । भारत में समाजवाद गांधीवाद की उपेक्षा करके संकट में पड़ जाएगा । गांधीवाद के 3 पहलू की ओर ध्यान दिलाते हैं इसका नैतिक या सदाचार संबंधित,सविनय अवज्ञा और सत्याग्रह के रूप में क्रांतिकारी विधि विज्ञान को उनकी महान देन मानते है

जयप्रकाश बाबू की के विचारों में समाजवाद के विकास की बात करें तो उनका विकास सर्वोदय के संदर्भ में और व्यवहारिक दोनों आधारों पर उन्होंने अच्छे से परीक्षण किया । वो कहते हैं कि अधिकांश लोगों की दृष्टि में सर्वोदय का सिद्धांत एक सनक है। जो अहिंसा और न्याय की बहुत बातें करता है लेकिन कोई समाज परिवर्तन लाने से डरता है ।सभी गंभीर बने लोगों से सिफारिश करूंगा कि सर्वोदय योजना का सावधानी से अध्ययन करें ।योजना भावुकतावाद में नहीं है बल्कि बुनियादी सामाजिक क्रांति का एक ठोस कार्यक्रम है। सर्वोदय एक अहिंसक शोषण मुक्त समाज का आदर्श है जो जाति या वर्ग पर आधारित नहीं होगा और जिसमें सबके लिए समान अवसर रहेंगे । सर्वोदय को जयप्रकाश नारायण जनता का समाजवाद मानते हैं । उनका कहना है कि पूंजीवादी राज्य राजनीतिक स्तर पर एकाधिकार कर लेते हैं और समाजवाद राजनीति और अधिक स्थानों पर एकाधिकार कर लेते हैं ।उनका कहना है कि केवल एक राज्य समाज में ही मानवीय स्वतंत्रता पूर्ण रूप से सरकार हो सकती है लेकिन राज्य के अधिकारों और कर्तव्यों और उसके क्षेत्रों को यथासंभव करने का है।

निष्कर्ष

गांधी और जयप्रकाश नारायण सर्वोदय को अंतिम पड़ाव नहीं मानते हैं। जयप्रकाश नारायण की जीवन यात्रा मार्क्स से समाजवाद और समाजवाद से सर्वोदय है। जयप्रकाश नारायण का कहना है कि मेरी यात्रा समाप्त नहीं हुई है। सत्याग्रह की बात हमेशा होती रहती है और कहा जाता है कि गांधीजी सत्याग्रह करते थे और उनके काम का प्रभाव समाज पर नहीं

पड़ता है। जिन लोगों को ऐसा लगता है वो गांधीजी को समझते ही नहीं क्या इधर–उधर सत्याग्रह कर देने से सर्वोदय हो जाएगा क्या इसे समाज परिवर्तन आ जाएगा। मार्क्स से गांधीवाद की और बढ़ते जयप्रकाश बाबु की जीवन यात्रा एक व्यक्ति की नही बल्कि विचारों का विकास है । लोकनायक जयप्रकाश नारायण कहिये या जे पी बिहार की धरती का यह सूरज स्वतंत्र भारत को लोकतंत्र और नए भारत के निर्माण का पाठ पढ़ा गया।

संदर्भ सूची

1. जयप्रकाश नारायण, लोक स्वराज्य, पृ० 35 356
2. यही पृ० 37
3. गांधीयन आउटलूक एण्ड टेकनीक इण्टरनेशनल सेमीनार नई दिल्ली, गर्वमेंट ऑफ इंडिया पब्लिकेशन 1953 पृ० 25
4. लोहिया, राम मनोहर, सोस्पिलिज्म, कार्ल मार्क्स एण्ड गाँधी (हैदराबाद, नवहिन्द, 1963) प्रीपेशक, पृ०–11
5. यशपाल, गाँधीवाद शव परीक्षा (लखनऊ, विप्लव कार्यालय)
6. राव, एम०बी० (एजु०) दी महात्मा ए मार्किस्ट सिमपोजियम (दिल्ली) पीपुल्स हाउस, 1969) पृ० 64
7. साह बी० एच० मार्किस्म, गाँधी इन्म बम्बे पोपुलर प्रकाशन 1963, पृ०–244
8. जयप्रकाश नारायण–समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र,
9. डॉ० रघुवंश, जयप्रकाश नारायण के विचार, पृ०– 97
10. गुप्ता ए० स० दास–गांधीयन कन्सट्रक्ट्स, पृ०–333.
11. यंग इंडिया
12. मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से